22

युधिष्ठिर का प्रबोध

ध्यान दें:

विष दूर करने वाले मन्त्र के सुनने से साँप विष को त्यागकर मुख को नीचे किए हुए रहता है। वैसे ही सभा में यदि बातचीत के प्रसंग में किसी के भी मुख से युधिष्ठिर की कीर्ति को सुनता था, वैसे ही दुर्योधन अर्जुन के पराक्रम को स्मरण करके अधोमुख होता था। एवं सदैव युधिष्ठिर को जीतने में असमर्थ दुर्योधन युधिष्ठिर से छल करने के लिए प्रवृत्त था। और फिर युधिष्ठिर के मुख से गुप्तचर द्वारा ज्ञापित सारी कथा को सुनकर द्रौपदी ने क्या अनुभव किया और युधिष्ठिर के क्रोध तथा उत्साह को बढ़ाने के लिए क्या-क्या कहा इत्यादि सब आप इस पाठ में पढ़ेंगे। शास्त्रज्ञों में और व्यवहारज्ञों में स्त्री के द्वारा कहा गया कोई भी वचन अपमान ही होता है ऐसा जानते हुए भी द्रौपदी कैसे युधिष्ठिर के प्रति कुछ भी कहने के लिए प्रवृत्त हुई, और दुर्योधन ने वस्तुतः कौन-सा बड़ा दोष किया हम इस पाठ से जानेंगे। कपटचारियों के प्रति सरलता उचित नहीं है। द्रौपदी के वचन का तात्पर्य क्या है इस विषय में आपको अच्छा बोध होगा।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़कर आप सक्षम होंगे:

- पद्य काव्यों का निर्माण कैसे करना चाहिए यह जानने में;
- श्लोकों का अन्वय कैसे करना चाहिए जानने में;
- द्रौपदी किसलिए उपदेश देने के लिए प्रवृत्त है जानने में;
- गुप्तचरों के वचनों का सार क्या होता है यह जानने में;
- किसके साथ कैसा आचरण करना चाहिए। जानने में;

21.1) मूल पाठ

कथाप्रसङ्गेन जनैरुदाहृतादनुस्मृताखण्डलसूनुविक्रमः।
तवाभिधानात् व्यथते नताननः स दुःसहान्मन्त्रपदादिवोरगः॥1.24॥

तदाशु कर्तुं त्वयि जिह्ममुद्यते विधीयतां तत्र विधेयमुत्तरम्।

ध्यान दें:

परप्रणीतानि वचांसि चिन्वतां प्रवृत्तिसाराः खलु मादृशां गिरः॥1.25॥

इतीरयित्वा गिरमात्तसत्क्रिये गतेऽथ पत्यौ वनसंनिवासिनाम्।
प्रविश्य कृष्णासदनं महीभुजा तदाचचक्षेऽनुजसन्निधौ वचः॥1.26॥

निशम्य सिद्धिं द्विषतामपाकृतीस्ततस्ततस्त्याः विनिगन्तुमक्षमा।
नृपस्य मन्युव्यवसायदीपिनीरुदाजहार द्रुपदात्मजा गिरः॥1.27॥

भवादृशेषु प्रमदाजनोदितं भवत्यधिक्षेप इवानुशासनम्।
तथापि वक्तुं व्यवसाययन्ति माम् निरस्तनारीसमया दुराधयः॥1.28॥

अखण्डमाखण्डलतुल्यधामभिश्चिरं धृता भूपतिभिः स्ववंशजैः।
त्वया स्वहस्तेन मही मदच्युता मतङ्गघेन स्रगिवापवर्जिता॥1.29॥

व्रजन्ति ते मूढधियः पराभवं भवन्ति मायाविषु ये न मायिनः।
प्रविश्य हि घ्नन्ति शठास्तथाविधानसंवृतांगान्निशिता इवेषवः॥1.30॥

22.2) मूल पाठ

कथाप्रसङ्गेन जनैरुदाहृतादनुस्मृताखण्डलसूनुविक्रमः।
तवाभिधानाद् व्यथते नताननः स दुःसहान्मन्त्रपदादिवोरगः॥24॥

अन्वय- कथाप्रसंगेन जनैः उदाहृतात् तव अभिधानात् अनुस्मृत अखण्डलसूनुविक्रमः नताननः सः दुर्योधनः सुदुःसहात् मन्त्रपदात् उरगः इव व्यथते।

अन्वयार्थ- वार्ता में श्रेष्ठ लोगों के द्वारा कहे गए तुम्हारे नाम से, ताक्ष्र्य और वासुकि के नाम से, स्मरण कर लिया है इन्द्र के अनुज के पक्षी के पाद विक्षेप को जिसने ऐसे इन्द्र के अनुज के पक्षी गरुड़ के पादविक्षेप का स्मरण कर, मुख को नीचे किए हुए वह सिंहासन पर बैठा हुआ दुर्योधन असह्य विष दूर करने वाले मन्त्र के पद से सर्प की तरह व्यथित होता है।

सरलार्थ- सभा में यदि बातचीत में किसी के भी मुख से युधिष्ठिर की कीर्ति को सुनता है। तब दुर्योधन आपके विशेष रूप से अर्जुन के पराक्रम को स्मरण करके अधोमुख होता है। जैसे विष दूर करने वाले मन्त्रों के सुनने से विषधारी साँप विष को त्यागकर फण को नीचे किए होता है।

तात्पर्यार्थ- इस श्लोक में दुर्योधन के डर का निरुपण महाकवि भारवि ने किया है। विष वैद्यों के द्वारा पढ़े गए गरुड़ वासुकि नाम युक्त मन्त्रों को सुनकर सर्प गरुड़ के प्रभाव को मन में सोचकर फण को नीचे किए बैठता है। इसी प्रकार सभा में बातचीत में किसी के भी द्वारा कहे गए युधिष्ठिर के नाम को सुनकर भय से व्याकुल होता है। और अर्जुन के पराक्रम का स्मरण करके वह अधोमुख होता है। 'न्याय से अर्जुन का उत्कर्ष कथन युधिष्ठिर का आभूषण ही है।'

व्याकरणात्मक टिप्पणी

- अनुस्मृताखण्डलसूनुविक्रमः - अनुस्मृतः आखण्डलसूनुविक्रमो येन सः अनुस्मृताखण्डलसूनुविक्रमः।
- तवाभिधानात् - तश्च वश्च तवौ ताक्ष्र्यवासुकी तयोः अभिधानमिति तवाभिधानम्, तस्मात् तवाभिधानात्।

ध्यान दें:

- नताननः - नतम् आननं यस्य स नताननः।
- व्यथते - व्यथ धातु लट् लकार प्रथम पुरुष एक वचन।

सन्धि युक्त शब्द

- मन्त्रपदादिवोरगः - मन्त्रपदात् + इव + उरगः।
- जनैरुदाहृतादनुस्मृताखण्डलसूनुविक्रमः - जनैः + उदाहृतात् + अनुस्मृताखण्डलसूनुविक्रमः

प्रयोग परिवर्तन

- कथाप्रसंगेन जनैः उदाहृताद् अनुस्मृताखण्डलसूनुविक्रमेण नताननेन तेन् सुदुःसहात् मन्त्रपदात् उरगेण इव तव अभिधानाद् व्यथते।

अलंकार आलोचना

- यहाँ श्लोक में उपमा अलंकार है उरग इव के साम्यप्रतिपादन से।

कोशः-

- अभिधानम् - आख्याह्वे अभिधानं च नामधेयं च नाम च।

पाठगत प्रश्न-1

1. वह दुर्योधन किसके समान व्यथित होता है?
2. दुर्योधन किससे व्यथित होता है?
3. और वह दुर्योधन किस प्रकार का होकर व्यथित होता है?
4. साँप किससे व्यथित होता है?
5. तवाभिधानात् इसके क्या दो अर्थ सम्भव होते है?

तदाशु कर्तुं त्वयि जिह्ममुद्यते विधीयतां तत्र विधेयमुत्तरम्।
परप्रणीतानि वचांसि चिन्वतां प्रवृत्तिसाराः खलु मादृशां गिरः॥25॥

अन्वय- तत् त्वयि जिह्मं कर्तुम् उद्यते तत्र विधेयम् उत्तरम् आशु विधीयताम्। परप्रणीतानि वचांसि चिन्वतां मादृशां गिरः प्रवृत्तिसाराः खलु।

अन्वयार्थ- अतः इस कारण से तुम्हारे प्रति (युधिष्ठिर के) कपट करने के लिए उद्यत वहाँ उस दुर्योधन के विषय में करने योग्य उपाय शीघ्र कीजिए। क्योंकि दूसरों के द्वारा कहे गए वचनों को संचित करने वाले, मुझ जैसे वनेचरों की वाणी प्रवृत्ति ही सार तत्त्व है। निश्चित ही वृतान्त ही प्रधान है।

सरलार्थ- इस कारण से युधिष्ठिर के प्रति वह दुर्योधन छल करने के लिए तत्पर हुआ। अर्थात् अतः आपको करने योग्य उपाय शीघ्र ही करने चाहिए। क्योंकि दूसरों के द्वारा कहे गए वचनों को संचित करने वाले दूतो के हमारे वचन समाचार प्रधान होते हैं। अर्थात् मुझ जैसे मन्दबुद्धि दूत केवल वार्ता को जानने वाले है न कि कार्य को। इसीलिए आप ही विचार करके समुचित कार्य को सम्पादित करो।

तात्पर्यार्थ- इस श्लोक में किरात अपने संदेश के सारांश को कहता है की दुर्योधन सदैव छल

ध्यान दें:

से आपको जीतने की इच्छा रखता है। इसीलिए आप जैसे उसकी पराजय हो वैसा विचार करें। कैसे उसकी पराजय होगी यह मैं तो कहने के लिए समर्थ नहीं हूँ। सत्य कथन ही दूतों का प्रयोजन है। वहाँ करने योग्य तो स्वामी का कर्तव्य है। अर्थात् जो भी समुचित कार्य हो उसके लिए आपको शीघ्रता करनी चाहिए।

व्याकरणात्मक टिप्पणी

- परप्रणीतानि - परैः प्रणीतानि इति। तृतीया तत्पुरुष समास।
- प्रवृत्तिसाराः - प्रवृत्तिरेव सारो यासां ताः। बहुव्रीह समास।
- विधीयताम् - वि + धा धातु + यक् प्रत्यय लोट लकार

सन्धि युक्त शब्द

- तदाशु - तत् + आशु

प्रयोग परिवर्तन

- तत् त्वयि जिह्मं कर्तुम् उद्यते तत्र विधेयम् उत्तरं विधेहि। परप्रणीतानि वचांसि चिन्वतां मादृशां गीर्भिः प्रवृत्तिसारभिः भूयते खलु।

कोशः-

- प्रवृत्तिः - वार्ता प्रवृत्तिर्वृत्तान्त उदन्तः स्याद्।

पाठगत प्रश्न-2

6. दुर्योधन क्या करने के लिए उद्यत है?
7. युधिष्ठिर के द्वारा दुर्योधन के विषय में क्या शीघ्रता करनी चाहिए?
8. युधिष्ठिर ने क्या संचित किया?
9. वनेचरों की वाणी किस प्रकार की होती है?
10. जिह्म इसका क्या अर्थ है?

मूल पाठ

इतीरयित्वा गिरमात्तसत्क्रिये गतेऽथ पत्यौ वनसंनिवासिनाम्।
प्रविश्य कृष्णासदनं महीभुजा तदाचचक्षेऽनुजसन्निधो वचः॥26॥

अन्वय- अथ इति गिरम् ईरयित्वा गते आत्तसत्क्रिये वनसन्निवासिनां पत्यौ सति महीभुजा कृष्णासदनं प्रविश्य अनुजसन्निधो तद् वचः आचचक्षे।

अन्वयार्थ- उसके बाद इस प्रकार के वचनों को कहकर अपने घर चले जाने पर सत्कार प्राप्त कर, पारितोषिक प्राप्त कर वनेचरों के स्वामी के राजा युधिष्ठिर के द्वारा द्रौपदी के भवन में प्रवेश करके भीमादि भाईयों के पास वनेचर द्वारा कहे गए वचनों को कहा। अथवा राजा युधिष्ठिर के द्वारा भवन में प्रवेश करके भीमादि अनुजों के समीप उस वनेचर द्वारा कहे गए कथनों को द्रौपदी से कहा।

ध्यान दें:

सरलार्थ- इस प्रकार के वचनों को युधिष्ठिर के लिए निवेदित करके वह वनेचर पुरस्कार ग्रहण करके अपने घर को गया। उसके बाद राजा युधिष्ठिर ने द्रौपदी के भवन में प्रवेश करके भीम अर्जुनादि अपने भाइयों के समीप में वनेचर के द्वारा कहे गए वचनों को कहा। अथवा राजा दुर्योधन ने भवन में प्रवेश करके अपने भाईयों से वनेचर के द्वारा कहे गए वचन को कहा।

तात्पर्यार्थ- दुर्योधन के सम्पूर्ण वृतान्त को युधिष्ठिर के लिए निवेदित कर वनेचर ने अपने कार्य को सम्पादित किया। फिर युधिष्ठिर से वनेचर पुरस्कार प्राप्त कर अपने घर गया। तब युधिष्ठिर ने भी वनेचर द्वारा प्रतिपादित वृतान्त भीम के समीप में स्थित द्रौपदी को कहने के लिए द्रौपदी के भवन को गया।

व्याकरणात्मक टिप्पणी

- आत्तसत्क्रिये- आत्ता गृहीता सत्क्रिया येन स। बहुब्रीह समास
- वनसन्निवासिनाम् - वने सन्निवसन्ति ये ते वनसन्निवासिनः। सप्तमी, तत्पुरुष समास
- कृष्णासदनम् - कृष्णाया द्रौपद्याः सदनं कृष्णासदनम्। षष्ठी, तत्पुरुष समास
- ईरयित्वा- ईर् धातु + णिच् प्रत्यय + क्त्वा प्रत्यय।
- आचचक्षे - आङ् + चक्षिङ् धातु, लिट् लकार।

सन्धि युक्त शब्द

- गतेऽथ - गते + अथ।
- इतीरयित्वा - इति + ईरयित्वा।

प्रयोग परिवर्तन

- इति ईरयित्वा आत्तसत्क्रिये वनसन्निवासिनां पत्यौ गते महीभुक् कृष्णासदनं प्रविश्य, वा सदनं प्रविश्य अनुजसन्निधो कृष्णां प्रति आचचक्षे।

कोशः-

- वनम् - अटव्यरण्यं विपिनं गहनं काननं वनम्।

पाठगत प्रश्न-3

11. राजा युधिष्ठिर ने भीमादि भाईयों के समीप क्या किया?
12. युधिष्ठर ने कहाँ प्रवेश करके कहा?
13. किसके चले जाने पर युधिष्ठिर के द्वारा वचन को कहा गया?
14. और वह वनेचर क्या करके चला गया।
15. आत्तसत्क्रिये इसका क्या अर्थ है?

मूल पाठ

निशम्य सिद्धिं द्विषतामपाकृतीस्ततस्ततस्त्याः विनिगन्तुमक्षमा।
नृपस्य मन्युव्यवसायदीपिनीरुदाजहार द्रुपदात्मजा गिरः॥२७॥

पाठ-22

युधिष्ठिर का प्रबोध

ध्यान दें:

अन्वय- ततः द्रुपदात्मजा द्विषतां सिद्धिं निशम्य ततस्त्याः अपाकृतीः विनिगन्तुम् अक्षमा, सती नृपस्य मन्युव्यवसायदीपिनीः गिरः उदाजहार।

अन्वयार्थ- युधिष्ठिर के कहने के बाद द्रुपद की पुत्री द्रौपदी कौरवों की दुर्योधनादि राजाओं की उन्नति को सुनकर उनसे प्राप्त हुए अपकारों को रोकने के लिए असमर्थ होती हुई राजा युधिष्ठिर के क्रोध और उद्योग को बढ़ाने वाली वाणी को कहती है।

सरलार्थ- युधिष्ठिर के कहने के बाद शत्रुओं कौरवों की समृद्धि को युधिष्ठिर के मुख से सुना। फिर कौरवों के कारण प्राप्त दु:ख से उत्पन्न मानसिक विकारों को रोकने में असमर्थ युधिष्ठिर के क्रोध तथा उत्साह को बढ़ाने के लिए वचनो को कहती है।

तात्पर्यार्थ- इस श्लोक में महाकवि भारवि ने द्रौपदी के मुख से युधिष्ठिर को जिससे क्रोध उत्पन्न हो वैसे वचनों को कहा है। युधिष्ठिर के मुख से शत्रु दुर्योधन की उन्नति को सुना। और उसे सुनने से क्षुब्ध हृदय वह द्रौपदी दुर्योधन के द्वारा किए गए अपकारों का स्मरण करती हुई युधिष्ठिर के प्रति इस प्रकार के वचनों को कहती है। जिससे उस युधिष्ठिर का क्रोध बढ़े और दुर्योधन के उन्मूलन के लिए प्रयत्न करें।

व्याकरणात्मक टिप्पणी

- द्रुपदात्मजा - द्रुपदस्य आत्मजा द्रुपदात्मजा। षष्ठी, तत्पुरुष समास
- मन्युव्यवसायदीपिनीः - मन्युश्च व्यवसायश्च मन्युव्यवसायौ। षष्ठी, तत्पुरुष समास
- निशम्य - नि + शम् धातु, + ल्यप्।
- उदाजहार - उत् + आ + हृ धातु, लट् लकार, प्रथम पुरुष, एकवचन।

सन्धि युक्त शब्द

- अपाकृतीस्ततस्ततस्त्याः - अपाकृतीः + ततः + ततस्त्याः।
- मन्युव्यवसायदीपिनीरुदाजहार - मन्युव्यवसायदीपिनीः + उदाजहार।

प्रयोग परिवर्तन

- द्विषतां सिद्धिं निशम्य, ततः ततस्त्या अपाकृतीः विनियन्तुम् अक्षमया, द्रौपद्या नृपस्य मन्युव्यवसायदीपिनीः गिरः उदाजह्रिरे।

अलंकार आलोचना

- यहाँ व्यंजन तकार की बार-बार आवृति से वृत्ति अनुप्रास अलंकार है।

कोशः-

- गीः - ब्राह्मी तु भारती भाषा गीर्वाग्वाणी सरस्वती।

पाठगत प्रश्न-4

16. किसने वचनों को कहा?
17. और उसने कब वचनों को कहा?

18. उसने क्या सुनकर इस प्रकार किया?

19. उसने किस प्रकार की वाणी को कहा?

20. वह द्रौपदी क्या करने में असमर्थ हुई?

मूल पाठ

भवादृशेषु प्रमदाजनोदितं भवत्यधिक्षेप इवानुशासनम्।
तथापि वक्तुं व्यवसाययन्ति माम् निरस्तनारीसमया दुराधयः॥28॥

अन्वय- यद्यपि भवादृशेषु प्रमदाजनोदितम् अनुशासनम् अधिक्षेपः इव भवति। तथाऽपि निरस्तनारीसमयाः दुराधयः मां वक्तुं व्यवसाययन्ति।

अन्वयार्थ- आप जैसे विद्वानों बुद्धिमानों को स्त्रियों के द्वारा दिया उपदेश तिरस्कार के समान होता है। फिर भी स्त्रियों की मर्यादा को समाप्त कर देने वाली तीव्र मनोव्यथायें मुझ द्रौपदी को कहने के लिए प्रेरित कर रही हैं।

सरलार्थ- आप जैसे बुद्धिमानों के लिए स्त्रियों के द्वारा कहा गया उपदेश तिरस्कार के समान नहीं होता है। फिर भी शत्रुओं द्वारा किए गए अपमान से और मनो व्यथाओं से मैं द्रौपदी अत्यन्त क्षुब्ध हूँ। इसीलिए स्त्रियों के लिए उचित व्यवहार को छोड़कर आपसे कुछ कहती हूँ।

तात्पर्य अर्थ- प्रस्तुत इस श्लोक में द्रौपदी के हृदय में प्रज्ज्वलित भयंकर प्रतिशोध की भावना से उत्पन्न उसकी प्रतिध्वनि प्राप्त होती है। विद्वानों के प्रति उपदेश वचन अपमान को प्रदर्शित करता है, उस पर स्त्री जनों का अनौचित्य ही है। शत्रु कौरवों के द्वारा उत्पन्न दुख से द्रौपदी सन्तप्त हुई। और उसकी दुसह्च मनोव्यथा को युधिष्ठिर के प्रति सब कहने के लिए वह द्रौपदी प्रेरित हुई।

व्याकरणात्मक टिप्पणी

- भवादृशेषु - भवन्त इव दृश्यन्ते।
- प्रमदाजनोदितम् - प्रमदा एव जनः प्रमदाजनः - तृतीय तत्पुरुष।
- निरस्तनारीसमयाः - नार्यः समयाः नारी समयाः- षष्ठी तत्पुरुष।
- अनुशासनम् - अनु + शास् धातु + ल्युट् प्रत्यय।
- व्यवसायन्ति - वि + अव + सो धातु+ णिच् प्रत्यय, लट् लकार, प्रथम पुरुष, बहुवचन।

सन्धि युक्त शब्द

- भवत्यधिक्षेपः - भवति + अधिक्षेपः।
- इवानुशासनम् - इव + अनुशासनम्।

प्रयोग परिवर्तन

- भवादृशेषु प्रमदाजनोदितेन अनुशासनेन अधिक्षेपेण इव भूयते। तथाऽपि निरस्तनारीसमयै दुराधिभिः अहं वक्तुं व्यवसाय्ये।

पाठ-22

युधिष्ठिर का प्रबोध

ध्यान दें:

ध्यान दें:

अलंकार आलोचना

- यहाँ अनुशासनम् अधिक्षेप इव में साम्य प्रतिपादन से उपमा अलंकार है।

कोशः-

- आधिः - पुंस्याधिर्मानसी व्यथा।

पाठगत प्रश्न-5

21. आप जैसे विद्वानों के प्रति क्या अपमान के समान होता है?
22. क्या प्रेरित कर रहे हैं?
23. वे मानसिक व्यथाएँ क्या और किसलिए प्रेरित कर रही है?
24. स्त्रियों के द्वारा कहा गया उपदेश कहाँ तिरस्कार के समान ही होता है?
25. अधिक्षेप इसका क्या अर्थ है?

मूल पाठ

अखण्डमाखण्डलतुल्यधामभिश्चिरं धृता भूपतिभिः स्ववंशजै।
त्वया स्वहस्तेन मही मदच्युता मतङ्गजेन स्रगिवापवर्जिता॥29॥

अन्वय- आखण्डलतुल्यधामभिः स्ववंशजैः भूपतिभिः चिरम् अखण्डं धृता मही मदच्युता मतंगजेन, स्रक् इव त्वया आत्महस्तेन अपवर्जिता।

अन्वयार्थ- इन्द्र के समान पराक्रम वाले, अपने कुल में उत्पन्न हुए राजाओं के द्वारा बहुत समय तक सम्पूर्णरुप से धारण की गई पृथ्वी आप युधिष्ठिर के द्वारा मदस्रावी हाथी के द्वारा पुष्प माला की तरह अपने हाथ से त्याग दी।

सरलार्थ- इन्द्र के जैसे पराक्रमी आपके कुल में उत्पन्न हुए भरत इत्यादि राजाओं के द्वारा बहुत समय तक सम्पूर्ण रुप से पृथ्वी धारण की गई थी। परन्तु आपके हाथों से ही विनिष्ट हो गई। जैसे मदमस्त हाथी अपने कण्ठ से माला को दूर करता है।

तात्पर्यार्थ- इस श्लोक में द्रौपदी के मुख से कवि कहता है की अपनी चपलता से ही यह पृथ्वी विनिष्ट हुई। इसीलिए यह विपत्ति ईश्वर द्वारा दी गई नहीं है उसके कथन का अभिप्राय है। इन्द्र के समान पराक्रमी अपने कुल में उत्पन्न हुए भरत आदि राजाओं ने बहुत समय तक इस पृथ्वी को धारण किया था। परन्तु वह पृथ्वी अब युधिष्ठिर के अपने हाथ से छोड़ दी गई। जैसे मदस्रावी हाथी के द्वारा पुष्पमाला को फेंक दिया जाता है।

व्याकरणात्मक टिप्पणी

- आखण्डलतुल्यधामभिः - आखण्डलेन तुल्यं धाम येषां ते। बहुव्रीह समास
- स्ववंशजैः - स्वस्य वंशः स्ववंशः , स्ववंशाज्जायन्ते इति स्ववंशजा। षष्ठी, तत्पुरुष समास
- धृता - धृ धातु + क्त प्रत्यय। टाप्
- अपवर्जिता - अप् + वृज् धातु णिच् + क्त प्रत्यय। + टाप्

ध्यान दें:

सन्धि युक्त शब्द

- आखण्डलतुल्यधामभिश्चिरम् - आखण्डलतुल्यधामभिः + चिरम्
- स्रगिव - स्रक् + इव।

प्रयोग परिवर्तन

- आखण्डलतुल्यधामभिः स्ववंशजैः चिरम् अखण्डं धृता महीं मदच्युतः मतंगजस्य, स्रक् इव त्वम् आत्महस्तेन अपवर्जितवान्।

अलंकार आलोचना

- यहाँ मतंगजेन इव त्वया स्रगिव अपवर्जिता में साम्य प्रतिपादन से पूर्णोपमा अलंकार है।

कोशः-

- मतंगजो गजो नागः कुंजरो वारणः करी।

पाठगत प्रश्न-6

26. किसने बहुत समय तक सम्पूर्ण रूप से पृथ्वी को धारण किया?
27. और वे किस प्रकार के हैं?
28. वह पृथ्वी किसके द्वारा त्याग दी गई?
29. और वह कैसे त्याग दी गई?
30. आखण्डलतुल्यधामभिः इसका क्या अर्थ है?

मूल पाठ

व्रजन्ति ते मूढधियः पराभवं भवन्ति मायाविषु ये नमायिनः।
प्रविश्य हि घ्नन्ति शठास्तथाविधानसंवृतांगान्निशिता इवेषवः॥30॥

अन्वय- ये मायाविषु मायिनः न भवन्ति ते मूढधियः पराभवं व्रजन्ति। शठाः तथाविधानम् असंवृतांगान् निशिता इषवः इव प्रविश्य घ्नन्ति।

अन्वयार्थ- जो व्यक्ति कपटियों के प्रति कपटी नहीं होते, वे मन्द बुद्धि लोग पराजय को प्राप्त होते हैं। क्योंकि धूर्त कपटी उस प्रकार के लोग अनाच्छादित शरीर वाले लोगों को तेज बाणों की तरह प्रवेश करके मार डालते हैं।

सरलार्थ- जो व्यक्ति कपटी, मायावी नहीं होते हैं वे व्यक्ति सदैव पराजय को प्राप्त करते हैं। क्योंकि कुटिल पुरुष आत्मीय होकर उन जैसों का सरलता से विनाश करते हैं। जैसे कवच आदि से अरक्षित शरीर में प्रवेश कर तीक्ष्ण बाण शरीर का नाश करते हैं। अतः कपटियों से सरलता उचित नहीं हैं।

तात्पर्यार्थ- इस श्लोक में महाकवि भारवि ने आर्जवं हि कुटिलेषु न नीतिः। शठे शाठयम् एव आचरेत् इत्यादि नीति को प्रतिपादित किया है। मन्दबुद्धि वाले लोग उनकी सदैव ही पराजय होती है जो कपटियों के साथ कपट नहीं करते हैं। जैसे युद्ध में तीक्ष्ण बाण कवच रहित शरीर में शीघ्रता से ही प्रवेश

ध्यान दें:

कर नाश करते हैं। वैसे ही कपटियों धूर्तों व्यक्ति सरल लोगों के अन्तर्भाव को जानकर उनका नाश करते हैं।

व्याकरणात्मक टिप्पणी

- मूढधियः - मूढा धीर्येषां ते मूढधियः - बहुव्रीहि समास।
- असंवृतांगान् - न संवृतानि असंवृतानि - तत्पुरुष समास।
- घ्नन्ति - हन् धातु + लट् लकार, प्रथम पुरुष, बहुवचन।

सन्धि युक्त शब्द

- शठास्तथाविधान - शठाः + तथाविधान्
- इवषेवः - इव + इषवः

प्रयोग परिवर्तन

- यैः मायाविषु मायिभिः न भूयते, तै मूढधीभिः पराभवो व्रज्यते। शठैः प्रविश्य निशितैः इषुभिरिव तथाविधाः असंवृतांगाः हन्यन्ते।

अलंकार आलोचना

- यहाँ शठाः निशिताः इषवः इव के साम्यप्रतिपादन से उपमा अलंकार है।

कोशः-

- शठः - निकृतस्त्वनृजुः शठ।

पाठगत प्रश्न-7

31. मन्दबुद्धि कौन हैं?
32. और वे क्या प्राप्त करते है?
33. धूर्त किनको प्रवेश कर मार डालते हैं?
34. और वे धूर्त उनको किस प्रकार प्रवेश कर मार डालते हैं?
35. निशिताः इषवः इसका क्या अर्थ है?

पाठ सार

सभा में यदि बातचीत में किसी के भी मुख से युधिष्ठिर की कीर्ति को सुनता है, तब दुर्योधन आपके विशेष कर अर्जुन के पराक्रम को स्मरण करके अधोमुख होता है। जैसे विष दूर करने वाले मन्त्र को सुनने से विषधारी सर्प विष को त्यागकर फण को नीचे किए होता है। इसी कारण से आपके प्रति वह दुर्योधन छल करने के लिए तत्पर होता है। अर्थात् आपको हराने की इच्छा करता है। इसीलिए आपको करने योग्य उपाय शीघ्र ही करना चाहिए। क्योंकि दूसरों के द्वारा कहे गए वचन दूतों में हमारे वचन वृतान्त प्रधान होते हैं। अर्थात् मुझ जैसे अल्पबुद्धि दूत केवल समाचार को जानने वाल है न कि कार्यों को। इसीलिए आपको ही विचार करके उचित कार्य का सम्पादन करना चाहिए। इस प्रकार के

ध्यान दें:

वचनों को युधिष्ठिर के लिए निवेदित कर वह वनेचर पुरस्कार को ग्रहण कर अपने घर को गया। उसके बाद राजा युधिष्ठिर द्रौपदी के भवन में प्रवेश कर भीम अर्जुन आदि अपने भाईयों के समीप में वनेचर के द्वारा कहे गए वचनों को कहा। अथवा राजा दुर्योधन ने भवन में प्रवेश करके अपने भाईयों से वनेचर के द्वारा कहे गए वचन को कहा। युधिष्ठिर के कहने के बाद शत्रुओं कौरवों की समृद्धि को युधिष्ठिर के मुख से सुना। फिर कौरवों के कारण प्राप्त दु:ख से उत्पन्न मानसिक विकारों को रोकने में असमर्थ युधिष्ठिर के क्रोध तथा उत्साह को बढ़ाने के लिए वचनों को कहती है। आप जैसे बुद्धिमानों के लिए स्त्रियों के द्वारा कहा गया उपदेश तिरस्कार के समान नहीं होता है। फिर भी शत्रुओं द्वारा किए गए अपमान से और मनोव्यथाओं से मैं द्रौपदी अत्यन्त क्षुब्ध हूँ। इसीलिए स्त्रियों के लिए उचित व्यवहार को छोड़कर आपसे कुछ कहती हूँ। इन्द्र के जैसे पराक्रमी आपके कुल में उत्पन्न हुए भरत इत्यादि राजाओं के द्वारा बहुत समय तक सम्पूर्ण रूप से पृथ्वी धारण की गई थी। परन्तु आपके हाथों से ही विनिष्ट हो गई। जैसे मदमस्त हाथी अपने कण्ठ से माला को दूर करता है। जो व्यक्ति कपटी, मायावी नहीं होते है वे व्यक्ति सदैव पराजय को प्राप्त करते हैं। क्योंकि कुटिल पुरुष आत्मीय होकर उन जैसों का सरलता से विनाश करते हैं। जैसे कवच आदि से अरक्षित शरीर में प्रवेश कर तीक्ष्ण बाण शरीर का नाश करते हैं। अत: कपटियों से सरलता उचित नहीं हैं।

पाठान्त प्रश्न

1. युधिष्ठिर की कीर्ति को सुनकर दुर्योधन की क्या दशा होती है। वर्णित कीजिए?
2. द्रौपदी ने युधिष्ठिर के उत्साह के लिए कब क्या किया?
3. द्रौपदी किससे कहने के लिए प्रेरित हुई?
4. युधिष्ठिर के द्वारा कैसे पृथ्वी को त्याग दिया गया द्रौपदी के वचनानुसार वर्णित कीजिए?
5. जो कपटियों के साथ कपटी नहीं होते उनकी दशा का वर्णन कीजिए?
6. समानार्थक धातु रूप को मिलाओ।

क- स्तम्भ	**ख-स्तम्भ**
1. उदाजहार	क. त्यक्ता
2. व्यथते	ख. याति
3. अपवर्जिता	ग. उक्तवती
4. घ्नन्ति	घ. गवेषयताम्
5. व्रजति	ङ विनाशयन्ति
6. विधीयताम्	च. दु:खायते
7. व्यवसाययति	छ. कथिता
8. आचचक्षे	ज. प्रेरयति

उत्तराणि

1. ग	2. च	3. क	4. ङ
5. ख	6. घ	7. ज	8. छ

ध्यान दें:

आपने क्या सीखा

1. कपटियों से सरलता उचित नहीं है
2. दूतों की वार्ता प्रवृत्ति सार होती है
3. स्त्रियों का उपदेश किसके जैसा होता है जाना।
4. कवि की प्रतिभा किस प्रकार की होती है स्पष्ट हुआ।
5. पद्य कैसे छन्दोबद्ध होते हैं यह स्पष्ट हुआ।

योग्यता विस्तार-

महाकवि भारवि

जीवन वृतान्तः- भारवि के जीवन वृत्ति के विषय में निश्चित रुप से कुछ भी नहीं कहा जा सकता, गदसिंह नामक किरातार्जुनीयम् के टीका कर्ता अपनी टीका के प्रारम्भ में उल्लेख किया है- 'कविकुंजरो भारविः प्राणदेवानरनामधेयः किरातार्जुनीयकाव्यं प्रणिनीषुस्तलक्षणं वस्तुनिर्देशु प्रणयन्नाह' इससे प्रतीत होता है कि प्राणदेव भारवे का वास्तविक नाम है और प्रखर प्रतिभा कारण से भारविः इस नाम से प्रसिद्ध था।

कृतिः- भारवि की एक ही रचना आज उपलब्ध है और वह किरातार्जुनीयम् है। इस प्रकार सामर्थ्यवान् सिद्ध कवि ने एक ही ग्रन्थ को रचा हो इसकी तो कल्पना ही नहीं कर सकते। क्योंकि काल कवलित संस्कृत साहित्य में जैसे कुछ अमर कवि का नाम मात्र ही शेष है, वैसे ही इनकी भी तब तक एक ही कृति प्रकाशित है। यद्यपि यह ही उनकी अमरता के लिए पर्याप्त है। और भारवि विषयक कुछ मुक्तक भी प्राप्त होते है। जैसे- श्री धर दास प्रणीत सदुक्तिकर्णामृत में कहा है-

सोद्वेगं करिकृत्तिवाससि भवद्वीडन्वितं ब्रह्मणि त्रैलौक्य-गुरावनादरवलत्तारं शचीभर्तरि। त्रासामीलितपक्ष्मभासविलसत्प्रेमप्रसन्नं हरौ क्षीरोदोत्थितया धिया विनिहतं चक्षुः शिवायास्तु वः ।।

रचना शैलीः- महाकवि भारवि की रचना लोक में प्रसिद्ध है क्योंकि उनकी रचना संस्कृत काव्यों में बृहत्त्रयी में गिनी जाती है। अर्थगौरव उनकी रचना शैली का मुख्य स्तम्भ है। और जो भारवेरर्थगौरवम् वचनादि से ही स्पष्ट होता है। शिशिर का समय आ गया ऐसे वाक्य को इस प्रकार प्रकट किया-

कतिपयसहकारपुष्परम्यस्तनुतुहिनोऽल्पविनिद्रसिन्दुवारः।
सुरभिमुखहिमागमान्तशंसी समुपययौ शिशिरः स्मरैकबन्धुः॥

इसका अर्थ होता है- इसके बाद कामदेव के अद्वितीय मित्र वसन्त आगमन का सूचक है, हेमन्त के अन्त में आम्र कुसुम की शोभा रमणीय है, लाल सिन्दूरी पुष्पों से सुशोभित शिशिर ऋतु आ गई।

संस्कृत साहित्य में किरातार्जुन की कम से कम 37 टीका रचित है। जिसमें मल्लिनाथ की घंटापथ टीका सर्वश्रेष्ठ है। 1912 सन् में कार्ल कैप्पलर महोदय हारवर्ड ओरियेंटल सीरिज इसके अन्तर्गत किरातार्जुनीयम् का जर्मन भाषा में अनुवाद किया गया है। आगंल भाषा में भी इसके भिन्न भिन्न भागों का छः से अधिक अनुवाद किए गए है

कुरुक्षेत्रम्:- हरियाणा राज्य का प्रमुख मण्डल तथा उसका मुख्यालय है। यह स्थान हरियाणा राज्य के उत्तर दिशा में है। और देहली अमृतसर स्थानों को जोड़ने वाले राष्ट्रीय राजमार्ग और रेलमार्ग स्थित

ध्यान दें:

है। हिन्दू तीर्थस्थल के रुप में यह स्थान अत्यन्त महत्वपूर्ण है। ऐसा विश्वास है कि महाभारत का युद्ध इसी स्थल पर हुआ। और भगवान श्री कृष्ण ने इसी क्षेत्र में अर्जुन को गीता का उपदेश दिया। इसका पौराणिक महत्व इससे भी अधिक है। यह स्थान ऋग्वेद तथा यजुर्वेद में वर्णित है। यहाँ विद्यमान सरस्वती नदी का भी अत्यन्त महत्व है।

द्वैतवनम्:- यह स्थान मेरठ प्रदेश के उत्तर में प्राय: 20 किमी. दूर स्थित है। और देववन्द कहलाता है। उत्तर प्रदेश के सहारनपुर मण्डल के अन्तर्गत यह स्थान है। यह वन काली नदी के पूर्व पर दिशाओं में योजन परिमित स्थान को व्याप्त करके 10 योजन की दूरी पर स्थित है। जो मुज्फ्फर नगर को विस्तीर्ण है। इस प्रकार सुनते है कि मीमांसा आदि के प्रर्वतक महर्षि जैमिनी की भी जन्मभूमि दैतवन है।

22.3) सन्दर्भग्रन्थ सूची

- महाकवि भारवि। किरातार्जुनीयम् (मल्लिनाथ कृत-घण्टापथ व्याख्या श्री जनार्दनपाण्डेयकृत विवृत्ति और हिन्दी भाषा अनुवाद से समन्वित) 1984। मोतीलाल बनारसीदास।
- महाकवि भारवि:। किरातार्जुनीयम् (घण्टापथ-सुधा-हिन्दी व्याख्या)।2004। चौखम्बा संस्कृत संस्थान। वाराणसी।

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

उत्तर-1

1. सर्प की तरह
2. बातचीत में लोगों के द्वारा कहे गए तुम्हारे नाम से
3. इन्द्र के अनुज के पक्षी के पाद प्रहार का स्मरण कर लेने वाले मुख को झुकाए।
4. असह्च विष दूर करने वाले मन्त्र के पद से
5. तुम्हारे तार्क्ष्य और वासुकि के नाम कथन से

उत्तर-2

6. कपट करने के लिए
7. करने योग्य उपाय
8. दूसरों के द्वारा कहे गए वचन
9. वृतान्त सार
10. कपटम्

उत्तर-3

11. वचन को कहा गया
12. द्रौपदी के भवन में प्रवेश करके

ध्यान दें:

13. स्वामी से पुरस्कार प्राप्त कर वनेचर अपने घर चला गया
14. वचन को कह कर
15. पुरस्कार को ग्रहण कर

उत्तर-4

16. द्रुपद पुत्री द्रौपदी
17. युधिष्ठिर के कहने के बाद
18. कौरवों की सिद्धि को सुनकर
19. राजा के क्रोध और उद्योग को बढ़ाने वाले वचनों को।
20. शत्रुओं के द्वारा दिए गए अपकारों को रोकने के लिए

उत्तर-5

21. स्त्रियों के द्वारा कहा गया आदेश
22. स्त्रियों की मर्यादा को छुड़ा देने वाली
23. द्रौपदी को, कहने के लिए
24. आप जैसे विद्वानों के प्रति
25. तिरस्कार

उत्तर-6

26. युधिष्ठिर के कुल में उत्पन्न हुए
27. इन्द्र के समान पराक्रमी
28. युधिष्ठिर के अपने हाथ से
29. हाथी के द्वारा पुष्प माला की तरह फेंक दी
30. इन्द्र के समान तेज वाले

उत्तर-7

31. जो कपटियों के साथ कपटी नहीं होते हैं।
32. पराजय
33. उस प्रकार के सरल लोगों को
34. कवचादि से रहित लोगों को तीखे बाणों की तरह।
35. तीक्ष्ण बाण।